Your Imagination, we Print...
JGP
JAY graphics & printers
COMMERCIAL PRINTERS
C-15 VIKRAM CHAMBARS, NR.INCOME TAX OFFICE, ASHRAM ROAD, AHMEDABAD.
Ph. : 93288 95485

Regd.RNI.No. GUJHIN/2016/72566

GANDHINAGAR

पाटनगर उदय

प्रधान सम्पादक : ईलेवान एच. ठाकर
मो.नं. : 99784 07016

सह सम्पादक : सुरेश के. मालाणी
मो.नं. 97269 63888

• वर्ष : 10 • अंक : 293 • दिनांक : 29-07-2026, WEDNESDAY • पेज : 04 • मुल्य : 0.90/- (paisa) वार्षिक शुल्क : 280/-

'पाटनगर उदय'
दैनिक समाचार पत्र में समाचार, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिये
सम्पर्क करें : गांधीनगर कार्यालय
403, अखबार भवन, सेक्टर-11, गांधीनगर- 382011.
अहमदाबाद कार्यालय : 4, अवनी हाउस, मिठाखली रेलवे क्रॉसिंग के पास, मिठाखली गाम, अहमदाबाद - 380006.
मोबाईल नं. : 93288 95485
email:- patnagaruday@gmail.com

• कार्यवाहक सम्पादक : कनकभाई पंड्या • Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR (GUJ) ई-मेलः patnagaruday@gmail.com

1.5 लाख लोगों को हटाया गया; टोक्यो से 900km दूर था केंद्र

जापान में 6.8 तीव्रता का भूकंप, शॉपिंग मॉल गिरा :50 से ज्यादा लोग फंसे

»टोक्यो

जापान के दक्षिणी कुमामोटो प्रांत में मंगलवार को 6.8 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया। तेज झटकों के बाद काशिमा शहर स्थित एक शॉपिंग मॉल की दूसरी मंजिल ढह गई, जिससे 50 से ज्यादा लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक कई लोग घायल हुए हैं।

जापान मौसम विज्ञान एजेंसी (JMA) के मुताबिक, भूकंप स्थानीय समयानुसार शाम 4:27 बजे आया। इसका केंद्र जमीन से करीब 10 किलोमीटर की गहराई में था। भूकंप के बाद सुनामी की चेतावनी जारी की गई थी, लेकिन करीब एक घंटे बाद इसे वापस ले लिया गया। भूकंप के बाद प्रशासन ने एहतियात के तौर पर क्यूशू द्वीप के 1.5 लाख से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों और राहत शिविरों में जाने के निर्देश दिए हैं। राष्ट्रीय प्रसारक NHK की तस्वीरों में कई सड़कों और पुलों में दरारें, इमारतों में आग और अन्य नुकसान दिखाई दे रहे हैं। सरकार ने राहत और बचाव अभियान तेज कर दिया है, जबकि प्रभावित इलाकों में नुकसान का आकलन किया जा रहा है। जापान की न्यूक्लियर रेगुलेशन अथॉरिटी ने अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) को बताया कि आज आए भूकंप से सेंदाई परमाणु ऊर्जा

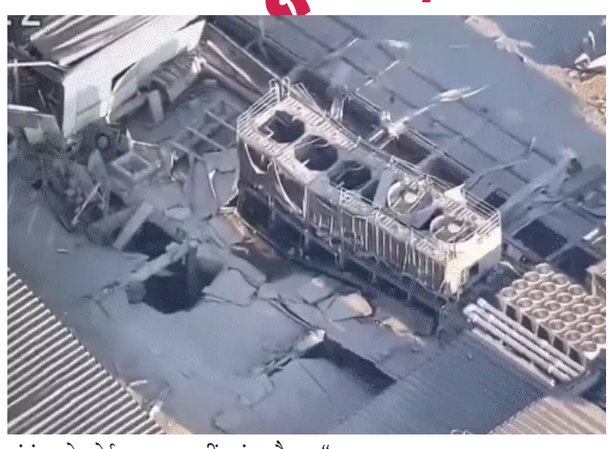

संयंत्र को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। IAEA ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, "हम हालात पर लगातार नजर बनाए हुए हैं।" साल 2011 में 9.1 तीव्रता के भूकंप और उसके बाद आई सुनामी से फुकुशिमा दाइची परमाणु संयंत्र के तीन रिएक्टरों में गंभीर हादसा हुआ था। इसके बाद से जापान में हर बड़े भूकंप के दौरान परमाणु संयंत्रों की सुरक्षा पर खास नजर रखी जाती है। जापान मौसम विज्ञान एजेंसी के मुताबिक, कुमामोटो में आए 6.8 तीव्रता के भूकंप के बाद अब तक 1 से 4 तीव्रता के 60 से ज्यादा आफ्टरशॉक दर्ज किए गए हैं। जापान की प्रधानमंत्री साने ताकइची ने मंगलवार को बताया कि कुमामोटो में राहत और बचाव अभियान के लिए अब तक करीब 3,600 सैन्यकर्मियों को तैनात किया गया है।

वहीं, जापान जापान सेल्फ डिफेंस फोर्स के 300 जवानों को भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा कि सेना स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर बचाव कार्य, राहत सामग्री पहुंचाने और प्रभावित लोगों की मदद में जुटेगी।

पीएम ताकइची ने कहा, 'भूकंप से बड़े पैमाने पर नुकसान की पुष्टि हो चुकी है। इस आपदा से प्रभावित सभी लोगों के प्रति मैं अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करती हूं।' जापान में मंगलवार को भूकंप के कुछ घंटे बाद काशिमा टाउन स्थित एक शॉपिंग मॉल में धमाका होने की खबर है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, कई लोग मॉल के अंदर फंसे हुए हैं और कुछ के मारे जाने की भी आशंका जताई जा रही है। स्थानीय न्यूज एजेंसी NHK के मुताबिक, दमकल विभाग ने बताया कि धमाके के बाद इमारत की दूसरी मंजिल का एक हिस्सा ढह गया।

सूरत जिला पंचायत की उत्पादन, सहकारिता एवं सिंचाई समिति की प्रथम बैठक आयोजित

»ब्यूरो रिपोर्ट : जे. बी. टांक, पत्रकार गुजरात

सूरत जिला पंचायत की उत्पादन, सहकारिता एवं सिंचाई समिति की प्रथम बैठक श्रीमती सुनीताबेन गुलाबभाई वसावा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में जिला पंचायत के स्व-निधि से संचालित कृषि, पशुपालन एवं सिंचाई विभाग की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के नियमों एवं प्रावधानों पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक के दौरान समिति की अध्यक्ष ने अधिकारियों से आह्वान किया कि जिला पंचायत की सभी योजनाओं का लाभ अंतिम छोर पर रहने वाले तथा जरूरतमंद लाभार्थियों तक प्रभावी ढंग से पहुंचे, इसके लिए पूरी निष्ठा एवं जिम्मेदारी के साथ कार्य किया जाए।

उन्होंने विशेष रूप से मानसून के दौरान अधिकतम जल संचयन के कार्यों को प्राथमिकता देते हुए योजनाबद्ध तरीके से क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश सिंचाई विभाग के कार्यपालक अभियंता डी.आर. पटेल को दिए।

इस अवसर पर समिति के सचिव एवं जिला कृषि अधिकारी एस.बी. गामित ने समिति के सभी नवनियुक्त सदस्यों को उत्पादन, सहकारिता एवं सिंचाई समिति के कार्यों, दायित्वों तथा जिम्मेदारियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

बैठक के अंत में समिति की अध्यक्ष श्रीमती सुनीताबेन गुलाबभाई वसावा ने सूरत जिले के सभी अधिकारियों एवं पदाधिकारियों को परस्पर उत्कृष्ट समन्वय के साथ कार्य करते हुए जिले का नाम गौरवान्वित करने हेतु शुभकामनाएं दीं।

Meta ने पहले मोदी का वीडियो हटाया, अब रीस्टोर किया :कहा- तकनीकी गड़बड़ी से हटा

PM ने 23 जुलाई को छात्रों को मैसेज दिया था

»नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का फेसबुक से हटाया गया वीडियो Meta ने दोबारा रीस्टोर कर दिया है। कंपनी ने मंगलवार को कहा कि तकनीकी गड़बड़ी की वजह से वीडियो गलती से हट गया था।

इससे पहले कुछ समय के लिए फेसबुक पर यह वीडियो दिखाई नहीं दे रहा था, जिसके बाद इस पर सवाल उठे। प्रधानमंत्री मोदी ने यह वीडियो 23 जुलाई को जारी किया था। इसमें उन्होंने जेन-जी और छात्रों को संबोधित करते हुए परीक्षा पेपर लीक के खिलाफ सख्त कार्रवाई का भरोसा दिया था।

इधर, न्यूज एजेंसी IANS ने सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्रालय (MeitY) ने Meta (फेसबुक और इंस्टाग्राम) के ग्लोबल हेड और कंपनी के पब्लिक पॉलिसी के ग्लोबल हेड को भी तलब किया है। 23 जुलाई की रात 12 बजे X हैंडल पर पोस्ट किए गए 2.56 मिनट के वीडियो मैसेज में मोदी ने कहा- पेपर लीक कोई मामूली विषय नहीं है। लाखों छात्रों, उनके माता-पिता के लिए पीड़ादायक है। इसलिए पेपर लीक से अब तक, पिछले ढाई महीनों में कई कदम उठाए हैं। गुनहगारों को पकड़ा है, वे जेल में हैं। हमारी जिम्मेदारी थी कि छात्रों का साल बर्बाद न हो, इसलिए कम समय में 22 लाख छात्रों का एग्जाम कराया। 19 जुलाई को रिजल्ट भी आ गया। उन्होंने यह भी कहा- हम इतने से संतोष करने वाले नहीं हैं। इसलिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने का निर्देश दिया है।दरअसल, यह पूरा मामला 3 मई को हुए NEET UG पेपर लीक से जुड़ा है। पीएम मोदी ने शुक्रवार रात को वीडियो जारी कर कहा- थैंक यू फ्रेंड्स! कल (गुरुवार) देर रात आपसे मिलने का मौका मिल गया। मैंने जो वीडियो पोस्ट किया था, उसको जिस प्रकार से आपने रिस्पॉन्ड किया और सकारात्मक सुझाव दिए, थैंक्स टू एन्ट्रीबॉडी। यह आपका प्यार बना रहेगा तो हमारा नाता और अधिक सक्रियता से जुड़ता रहेगा। थैंक यू, थैंक यू दोस्तों। नीट पेपर लीक मामले में छात्रों का प्रदर्शन खत्म होने के एक दिन बाद 26 जुलाई को पीएम मोदी ने परीक्षा सुधार के लिए हाईपावर टास्क फोर्स का गठन किया। टीम में छह मेंबर्स हैं। इंफोसिस को-फाउंडर नंदन नीलेकणी इसके अध्यक्ष होंगे।

पीएम ने शाम 7 बजे के करीब इंस्टाग्राम पर एक वीडियो मैसेज जारी कर इसकी जानकारी दी। पीएम ने कहा- स्टूडेंट के भविष्य के लिए सरकार लगातार कदम उठा रही है। जिन लोगों ने स्टूडेंट के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया। वे जेलों में सड़ रहे हैं।

ट्रम्प से मुलाकात करने अमेरिका पहुंचे जेलेंस्की-नेतन्याहू :रूस से लड़ने मिसाइलें मांगेंगे यूक्रेनी प्रेसिडेंट

इजराइली राष्ट्रपति पर ईरान जंग खत्म करने का दबाव

»तेहरान

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प व्हाइट हाउस में आज यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात करेंगे। माना जा रहा है कि इन दोनों बैठकों में यूरोप और पश्चिम एशिया के मौजूदा हालात पर अहम फैसले हो सकते हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, जेलेंस्की ट्रम्प से ऐसे समय मुलाकात कर रहे हैं, जब रूस यूक्रेन पर लगातार मिसाइल और ड्रोन हमले कर रहा है। इस बैठक में वे अमेरिका से पैट्रियट एयर डिफेंस मिसाइलें और उनके उत्पादन में सहयोग मांगेंगे। जेलेंस्की का कहना है कि यूक्रेन की हवाई सुरक्षा मजबूत करने के लिए इन मिसाइलों की तुरंत जरूरत है। वहीं, नेतन्याहू के साथ ट्रम्प की बैठक में ईरान जंग पर चर्चा होगी। द टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, इजराइली प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) के एक अधिकारी ने कहा कि दोनों नेता इस बात पर चर्चा करेंगे कि युद्ध को कैसे खत्म किया जाए और क्षेत्र में स्थायी शांति कैसे लाई जाए। ईरान और अमेरिका के बीच होर्मुज स्ट्रेट को लेकर जारी तनातनी के बीच ओमान ने एक नया प्रस्ताव दिया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, ओमान चाहता है कि होर्मुज स्ट्रेट का नियंत्रण सिर्फ ईरान के पास न रहे। इसके लिए उसने ईरान को प्रस्ताव दिया है कि इस अहम समुद्री रास्ते का प्रबंधन क्षेत्र के सभी देशों की साझेदारी से किया जाए।

रिपोर्ट के मुताबिक, इस प्रस्ताव को खाड़ी क्षेत्र के कई देशों का समर्थन भी हासिल है। इसमें मलक्का स्ट्रेट की तर्ज पर व्यवस्था बनाने की बात कही गई है। मलक्का स्ट्रेट का इस्तेमाल करने वाले जहाज स्वेच्छा से टैक्स देते हैं। ओमान चाहता है कि होर्मुज स्ट्रेट में भी ऐसा ही मॉडल लागू किया जाए। मलक्का स्ट्रेट के तटीय देश इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर मिलकर इसके लिए एक नेविगेशन फंड चलाते हैं। इसी रकम से नौवहन, पर्यावरण संरक्षण और खोज-बचाव जैसी सेवाएं चलाई जाती हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की की टीमें दोनों नेताओं की द्विपक्षीय बैठक कराने की कोशिश कर रही हैं। दोनों नेता आज ट्रम्प से व्हाइट हाउस में मुलाकात करने वाले हैं। ईरान ने रूस को बड़े पैमाने पर हथियार सप्लाई किए हैं। ईरान ने रूस को हजारों की संख्या में शाहेद ड्रोन भेजे हैं। रूस इन ड्रोन का इस्तेमाल यूक्रेन के इंफ्रास्ट्रक्चर और शहरों पर हमला करने के लिए बड़े पैमाने पर कर रहा है। हालांकि ईरान आधिकारिक तौर पर यह कहता रहा है कि वह यूक्रेन युद्ध में किसी का पक्ष नहीं ले रहा, लेकिन पश्चिमी खुफिया एजेंसियों और रिपोर्टों के अनुसार दोनों देशों के बीच हथियारों का बड़ा लेन-देन हुआ है।

हिमाचल के चंबा में अचानक बाढ़ से पत्थरों का सैलाब:मलबा घरों में घुसा

»नई दिल्ली

देश के कई राज्यों में भारी बारिश आफत बन गई है। हिमाचल प्रदेश के चंबा में सोमवार देर रात हुई मूसलाधार बारिश के बाद सरोल मोहल्ले समेत कई इलाकों में अचानक बाढ़ आ गई। पानी के साथ आए पत्थरों और मलबे का सैलाब घरों और दुकानों में घुस गया। कई मकानों की पहली मंजिल तक मलबा भर गया।

उत्तराखंड में मंगलवार सुबह चमोली, टिहरी, उत्तरकाशी और रुद्रप्रयाग में लैंडस्लाइड हुई। रुद्रप्रयाग के कुंड-काकड़ा के बीच केदारनाथ नेशनल हाईवे मलबा आने से बंद हो गया। सोनप्रयाग-गौरीकुंड हाईवे भी बंद है, जिसके चलते चारधाम यात्रा दो दिन रोक दी गई है। दिल्ली में मंगलवार सुबह जोरदार बारिश हुई। इससे जगह-जगह सड़कों पर पानी भर गया। चंडीगढ़ स्थित पंजाब यूनिवर्सिटी (PU) में मंगलवार सुबह PhD स्कॉलर युवती की करंट लगने से मौत हो गई। वह गर्ल्स हॉस्टल से अपने विभाग में पढ़ाई के लिए जा रही थी। उधर, मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में रविवार शाम बिजली गिरने से 11 साल के बच्चे समेत तीन लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग की तरफ से जारी नई सैटेलाइट इमेज में पश्चिम बंगाल से उत्तराखंड तक 1500km एरिया में बादल छाए हुए हैं। इसकी वजह बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना डीप डिप्रेशन है।

डीप डिप्रेशन समुद्र के ऊपर बनने वाला कम दबाव का एक स्ट्रॉन्ग मौसम सिस्टम होता है। इसमें हवा की रफ्तार सामान्य डिप्रेशन से ज्यादा होती है। इससे भारी बारिश होती है।

मौसम विभाग के मुताबिक, मानसून ट्रफ के असर से दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार में भारी बारिश हो सकती है। हरियाणा में मंगलवार सुबह से लेकर दोपहर तक छह जिलों यमुनानगर, पंचकूला, फरीदाबाद, गुरुग्राम, हिसार और भिवानी में तेज बारिश हुई। पंचकूला के पिंजौर के एचएमटी स्थित श्री गौरी शंकर मंदिर के समीप बना वैकल्पिक पुल बह गया। इससे यातायात पूरी तरह ठप हो गया। वहीं, गुरुग्राम में जहां मुख्य मार्ग पर रोड दो-दो फीट तक भारी भर गया। महाराष्ट्र के नागपुर में भारी बारिश के कारण शहर में कई जगह जलभराव हो गया है। एक स्कूल के बाहर के हालात जहां छात्रों के लिए सुरक्षा रस्सियां लगाई गई हैं, ताकि स्कूल परिसर से बाहर निकलते समय वे उन्हें पकड़ सकें।

दिल्ली पुलिस बोली- प्रोटेस्ट में शामिल 2873 अपराधी, इनमें से 989 पर गंभीर मामले

दावा- CJP प्रदर्शन में हत्या के 101 आरोपी शामिल थे

»नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस का दावा है कि कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के प्रदर्शन में हत्या के 101 आरोपी शामिल हुए थे। इस प्रदर्शन में आए 2873 लोगों का क्रिमिनल रिकॉर्ड यानी आपराधिक रिकॉर्ड मिला, जिनमें 989 लोगों पर गंभीर मामले थे।

इनकी पहचान फेशियल रिकग्निशन सिस्टम (FRS) और अन्य तकनीकी माध्यमों से की गई। पुलिस का दावा है कि प्रदर्शन में शामिल हुए लोगों में हत्या, यौन अपराध, पॉक्सो, लूट समेत अन्य गंभीर मामलों के आरोपी हैं। CJP ने 20 जुलाई संसद चलो मार्च निकाला था। इसमें पुलिस ने छात्रों पर लाठीचार्ज किया। 25 जुलाई की शाम को धर्मेंद्र प्रधान ने शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद प्रदर्शन खत्म हो गया। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, 20 जुलाई की झड़पों में 118 से अधिक पुलिसकर्मी घायल हुए थे। इनमें स्पेशल कमिश्नर, जॉइंट कमिश्नर, एडिशनल कमिश्नर, डीसीपी, एडिशनल डीसीपी और एसीपी रैंक के अधिकारियों के अलावा कई महिला पुलिसकर्मी भी शामिल थीं। वहीं, इस घटना में करीब 60 प्रदर्शनकारियों के भी घायल होने की जानकारी दी गई। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने जंतर-मंतर छात्र आंदोलन और 20 जुलाई के संसद चलो मार्च के दौरान पीएम के खिलाफ आपत्तिजनक और अभद्र टिप्पणियों वाले पोस्ट एवं वीडियो हटाने के लिए कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को नोटिस जारी किए थे।

दिल्ली पुलिस के मुताबिक, प्रदर्शन और उसके बाद हुई हिंसा के दौरान विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पीएम के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट सामने आए थे।

संपादकीय

रोजगार बाजार के अनुरूप ढले शिक्षा

विकसित भारत के लक्ष्य की सबसे महत्वपूर्ण और मजबूत सीढ़ी शिक्षा है, लेकिन हाल के आंकड़े इस सीढ़ी की कमजोरी दर्शाते हैं। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट के अनुसार देश में केवल 56 प्रतिशत स्नातक ही आज किसी छोटे-मोटे रोजगार के योग्य माने जा सकते हैं। औसतन हर दो में से एक युवा डिग्री लेकर भी समकालीन रोजगार बाजार की जरूरतों पर खरा नहीं उतर पा रहा है। दूसरी ओर इंडिया ग्रेजुएट स्किल इंडेक्स के अनुसार एआइ और मशीन लर्निंग से जुड़ी भूमिकाओं में रोजगार के अवसर पिछले एक साल में 46 प्रतिशत बढ़े हैं, जबकि एचआर, डिजिटल मार्केटिंग और सामान्य प्रशासन जैसी पारंपरिक नौकरियों की मांग लगातार घट रही है।

अमेरिका, चीन, जापान सहित यूरोप के विश्वविद्यालय इस बदलाव को इतनी गंभीरता से ले रहे हैं कि उन्होंने एआइ के कारण अपने पारंपरिक कार्यक्रमों की घटती मांग को देखते हुए न सिर्फ उनकी फीस कम कर दी है, बल्कि बदलते रोजगार परिदृश्य के अनुरूप अपने विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों में आमूलचूल परिवर्तन भी किया है। चीन ने पिछले महीने अपने 12 हजार से अधिक (लगभग एक तिहाई) स्नातक डिग्री कार्यक्रमों को अप्रासंगिक मानते हुए बंद कर दिया। ये वे पाठ्यक्रम थे, जो समकालीन और भविष्य के जाब मार्केट से मेल नहीं खाते। उनकी जगह चीन ने एआइ, रोबोटिक्स, सेमीकंडक्टर, क्वांटम एप्लीकेशन और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में नए कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसकी मूल वजह यह थी कि वहां एक ओर डिग्रीधारी बेरोजगारों की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही थी और प्रतिष्ठानों को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल कर्मी नहीं मिल पा रहे थे।

भारत में भी पुराने और परंपरागत कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों को तत्काल समाप्त या संशोधित करने की आवश्यकता है। उभरते हुए रोजगार परिदृश्य और कौशल आवश्यकताओं के अनुरूप अपने शिक्षा-तंत्र को बदलकर ही हम उसे प्रासंगिक बनाए रख सकते हैं। आज फैक्ट्री से लेकर बाजार तक और डिजाइनिंग स्टूडियो से लेकर फाइनेंशियल एनालिसिस तक एआइ साथ-साथ काम कर रही है। इस नए युग को 'स्किल आग्मेंटेशन' की जरूरत है, जहां तकनीक इंसान की जगह नहीं लेती, बल्कि उसकी क्षमता बढ़ाती है।

इसी कारण पिछले केंद्रीय बजट में 'शिक्षा के लिए एआइ' उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने हेतु 500 करोड़ रुपये का प्रविधान किया गया है। इसे इंडिया एआइ मिशन के साथ जोड़ा गया है। हमें इस मद में भारी मात्रा में निवेश की आवश्यकता है। साथ ही एआइ को केंद्र में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को पुनर्व्याख्यायित और क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। शिक्षा और शोध में अधिकतम निवेश करने वाले देश ही आर्थिक महाशक्ति बनते हैं।

पाठ्यक्रमों को फिर से डिजाइन करने के क्रम में हमें मानविकी को खत्म नहीं करना है, बल्कि उसे समकालीन आवश्यकताओं के अनुसार बदलना है। इतिहास को डाटा विजुअलाइजेशन के साथ, साहित्य को कंटेंट स्ट्रैटेजी और डिजिटल नैरेटिव के साथ दर्शन को एआइ एथिक्स के साथ और भाषाविज्ञान को कंप्यूटेशनल सिमेंटिक्स के साथ जोड़ना होगा। इसे ही डिजिटल ह्युमैनिटीज और कल्चरल एनालिटिक्स कहा जाता है। इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम को भी लीगेसी तकनीकों से निकालकर सिस्टम थिंकिंग और एनर्जी ट्रांजिशन के इर्द-गिर्द बनाना होगा। हमें लचीलेपन और बहु-विषयकता को बढ़ावा देना चाहिए। एक छात्र बीकाम के साथ डाटा एनालिटिक्स पढ़ सके, बीए के साथ कोडिंग सीख सके, विज्ञान के साथ उद्यमिता का प्रोजेक्ट कर सके।

एनईपी का मेजर-माइनर सिस्टम इसी सोच से आया है। दीवारें तोड़कर वातायन बनाने होंगे। कला, वाणिज्य, विज्ञान के पुराने खांचे अब काम नहीं आएंगे। समाज, उद्योग और बाजार के साथ सहवर्ती संबंध और निरंतर संवाद होना चाहिए। पाठ्यक्रम बंद कमरे में नहीं बनने चाहिए। टीसीएस, इन्फोसिस, एमएसएमई, स्टार्टअप इकोसिस्टम और क्षेत्रीय उद्योगों को बोर्ड आफ स्टडीज में जगह मिलनी चाहिए। इंटर्नशिप दो माह की औपचारिकता न होकर छह माह की परियोजना होनी चाहिए।

छात्र का मूल्यांकन मार्कशीट के आधार पर नहीं होना चाहिए। वह संस्थान से अंकपत्र लेकर नहीं, निपुणता लेकर निकले। इसके लिए शिक्षकों की निरंतर अपस्किलिंग होनी चाहिए और छात्रों के प्लेसमेंट के आधार पर उनका मूल्यांकन होना चाहिए। अधुनातन सूचना-तकनीक का बुनियादी ढांचा बनाना भी आवश्यक है। वर्चुअल लैब, एआइ ट्यूटर, सिमुलेशन आधारित प्रयोगशालाएं अब विलासिता नहीं, आवश्यकता हैं। इन्हें टियर-टू और टियर-थ्री शहरों तक पहुंचाना होगा, ताकि डिजिटल डिवाइड शिक्षा का डिवाइड न बन जाए। उद्यमिता के अनुकूल परिवेश भी विकसित करना होगा। इसे शिक्षा-तंत्र के डीएनए में डालना होगा।

प्रत्येक डिग्री में स्टार्टअप दृष्टि, हरेक कैंपस में इनक्यूबेशन लैब और फंडिंग सुनिश्चित करनी होगी। हमें नौकरी मांगने वाली पीढ़ी नहीं, नौकरी देने वाली पीढ़ी तैयार करनी होगी। यदि हम वाकई विकसित भारत चाहते हैं तो हमें विकसित विश्वविद्यालय तैयार करने होंगे। विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान और राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन राजनीति और लालफीताशाही से बचकर इस सपने को साकार कर सकते हैं।

गुरु पूर्णिमा विशेष : गुरु केवल ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाले, आत्मविश्वास जगाने वाले और अंधकारमय मार्ग में प्रकाश की किरण बनने वाले मार्गदर्शक हैं

चारों वेदों के रचयिता तथा मानव जाति को महाभारत, अठारह पुराणों और श्रीमद्भागवत जैसे महान ग्रंथों की अमूल्य धरोहर देने वाले जगद्गुरु महर्षि वेदव्यासजी की जयंती ही गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है

»रिपोर्ट : जे. बी. टांक, पत्रकार गुजरात

आषाढ़ का महीना अर्थात आकाश में घने काले बादलों से घिरा वातावरण। जैसे बादल बरसकर धरती की प्यास बुझाते हैं और चारों ओर हरियाली फैला देते हैं, उसी प्रकार गुरु अपने ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा कर शिष्य के भीतर के अज्ञान को दूर कर उसके जीवन को प्रकाशित करते हैं।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा का दिन गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व के रूप में मनाया जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से इस दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं से सुशोभित होता है, जो मन की शांति और पूर्णता का प्रतीक माना जाता है। चारों वेदों की रचना करने वाले तथा महाभारत, अठारह पुराण और श्रीमद्भागवत जैसे महान ग्रंथ मानवता को प्रदान करने वाले जगद्गुरु महर्षि वेदव्यासजी की जयंती होने के कारण इस दिन को "व्यास पूर्णिमा" भी कहा जाता है। हिंदू, जैन और बौद्ध धर्मावलंबियों द्वारा अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने तथा गुरु-शिष्य के पवित्र संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने वाला यह पर्व अत्यंत पावन और प्रेरणादायी माना जाता है।

शास्त्रों में 'गुरु' शब्द की अत्यंत सुंदर व्याख्या की गई है। 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है उसका नाश करने वाला। जो व्यक्ति हमारे जीवन से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है, वही गुरु है। गुरु केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि जीवन जीने की सही कला, संस्कार और नैतिक मूल्यों का भी बोध कराते हैं। हमारे जीवन के प्रथम गुरु माता-पिता होते हैं, जो हमें जीवन की पहली शिक्षा देते हैं। इसके बाद शिक्षक हमें शिक्षा के मार्ग पर आगे बढ़ाकर सफल जीवन की ओर ले जाते हैं। वास्तव में जो भी व्यक्ति हमें सही मार्ग दिखाता है, वह गुरु कहलाने योग्य है, किंतु आत्मा का कल्याण करने वाले सद्गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है।

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन गुरुकुलों में शिष्य वर्षों तक गुरु के सान्निध्य में रहकर ज्ञान, संस्कार और जीवन जीने की

कला सीखते थे। समय के साथ शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन अवश्य आया है, लेकिन गुरु का सम्मान और उनके प्रति श्रद्धा आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण बनी हुई है।

जीवन में सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँची प्रत्येक महान विभूति के पीछे किसी न किसी गुरु का मार्गदर्शन अवश्य रहा है। इसलिए गुरु केवल ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाले, आत्मविश्वास जगाने वाले तथा अंधकारमय मार्ग में प्रकाश की किरण बनने वाले प्रेरणास्रोत हैं।

इतिहास के पन्नों में अंकित गुरु-शिष्य के पवित्र संबंध

यदि पौराणिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से गुरु-शिष्य परंपरा को देखें तो—

* भगवान शिव (आदिगुरु) ने इसी दिन सप्तर्षियों को योग का ज्ञान देना प्रारंभ किया था।

* भगवान बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्ति के पश्चात सारनाथ में अपने प्रथम पाँच शिष्यों को इसी पूर्णिमा के दिन पहला उपदेश दिया था।

* भगवान महावीर स्वामी ने अपने प्रथम शिष्य गौतम स्वामी को आध्यात्मिक उत्तरदायित्व सौंपा।

* गुरु धौम्य की आज्ञा का पालन करने हेतु खेत की मेड़ पर स्वयं लेट जाने वाले शिष्य आरुणि गुरु भक्ति और समर्पण के अद्वितीय उदाहरण हैं।

* गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा को गुरु मानकर संसार के श्रेष्ठ धनुर्धर बने एकलव्य गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा का प्रतीक हैं।

* आचार्य चाणक्य ने अपनी बुद्धिमत्ता और मार्गदर्शन से एक सामान्य बालक चंद्रगुप्त को अखंड भारत का सम्राट बनाया, जो दर्शाता है कि गुरु राष्ट्र का भाग्य भी बदल सकता है।

* स्वामी विवेकानंद और उनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस की जोड़ी ने भारतीय अध्यात्म का संदेश संपूर्ण विश्व तक पहुँचाया।

इस प्रकार भारत का इतिहास गुरु और शिष्य के अद्भुत समर्पण तथा आदर्श संबंधों से परिपूर्ण है।

आधुनिक युग में गुरु पूर्णिमा की प्रासंगिकता

डिजिटल युग में गुरु पूर्णिमा कई बार केवल संदेश भेजने या "हैप्पी गुरु पूर्णिमा" का स्टेटस लगाने तक सीमित होती जा रही है। इसके बावजूद आज भी सूरत सहित देशभर की अनेक शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और धार्मिक संस्थाओं में गुरु पूर्णिमा अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥" — संत कबीर

संत कबीर के इस प्रसिद्ध दोहे का अर्थ है कि यदि गुरु और भगवान दोनों एक साथ सामने खड़े हों, तो सबसे पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। इसलिए गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान, संस्कार और नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाना ही गुरु पूर्णिमा का वास्तविक संदेश है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सोशल मीडिया पर अफवाहों और नकारात्मकता फैलाने के बजाय ज्ञान, सद्भाव और सकारात्मक विचारों का प्रसार किया जाए। आधुनिकता की दौड़ में अपनी संस्कृति और संस्कारों को भूलने के बजाय हमें गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर भारतीय परंपराओं के अनुरूप गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाना चाहिए।

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

अर्थात् गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही भगवान महेश हैं और गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं। ऐसे सद्गुरु को मेरा कोटि-कोटि नमन।

रोटरी क्लब ऑफ सूरत सी-फेस द्वारा ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट के तहत न्यू सिविल अस्पताल को 30 लाख मूल्य की अत्याधुनिक हाई-एंड सोनोग्राफी मशीन भेंट

न्यू सिविल में गर्भवती महिलाओं की हाई-रिस्क प्रेग्नेंसी के निदान के लिए वरदान साबित होगी नई सोनोग्राफी मशीन

सोनोग्राफी के साथ गर्भवती महिलाओं के लिए 2D इकोकार्डियोग्राफी की सुविधा भी मिलेगी

»जे. बी. टांक, पत्रकार, गुजरात

सूरत, मंगलवारः सूरत के न्यू सिविल अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ तथा जनोपयोगी बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। दक्षिण गुजरात के प्रमुख चिकित्सा केंद्र एवं हजारों मरीजों के लिए जीवनरक्षक साबित हो रहे न्यू सिविल अस्पताल के स्त्री एवं प्रसूति रोग (गायनेकोलॉजी) विभाग में उपचार हेतु आने वाली गर्भवती महिलाओं की सुविधा के लिए रोटरी क्लब ऑफ सूरत सी-फेस द्वारा ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट के अंतर्गत लगभग 30 लाख मूल्य की अत्याधुनिक हाई-एंड सोनोग्राफी मशीन भेंट की गई है। इस नवीन तकनीक से लैस मशीन के माध्यम से अस्पताल में उपचार के लिए आने वाली हजारों जरूरतमंद महिलाओं को एक ही स्थान पर उच्च गुणवत्ता वाली, त्वरित एवं सटीक जांच की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. पारुल वडगामा ने बताया कि गायनेकोलॉजी विभाग को प्राप्त इस नई सोनोग्राफी मशीन की विशेषता यह है कि इसमें सोनोग्राफी के साथ-साथ गर्भवती महिलाओं के लिए 2D इकोकार्डियोग्राफी की सुविधा भी उपलब्ध है। अब तक गर्भवती महिलाओं को इको टेस्ट कराने के लिए गायनेकोलॉजी विभाग की इमारत से दूसरी इमारत तक जाना पड़ता था, लेकिन अब एक ही मशीन से दोनों जांचें एक ही स्थान पर संभव होंगी, जिससे मरीजों को अनावश्यक परेशानी से राहत मिलेगी।

गायनेकोलॉजी एवं प्रसूति विभाग की प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. रागिनी वर्मा ने बताया कि सूरत का न्यू सिविल अस्पताल दक्षिण गुजरात का प्रमुख टर्शियरी रेफरल सेंटर है, जहां प्रतिदिन लगभग 100 से 150 गर्भवती महिलाएं जांच के लिए आती हैं। पूरे गुजरात में सबसे अधिक प्रसव सूरत सिविल अस्पताल में होते हैं, जिसके कारण यहां हाई-रिस्क प्रेग्नेंसी के मामले भी अधिक आते हैं। ऐसे में यह नई अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन मरीजों के लिए किसी वरदान से कम नहीं होगी। इस अत्याधुनिक मशीन में ट्रांसएब्डॉमिनल, ट्रांसवेजाइनल, डॉप्लर तकनीक के साथ-साथ एडल्ट इकोकार्डियोग्राफी की भी सुविधा उपलब्ध है। विशेष रूप से स्टेम सेल उपचार प्राप्त कर रही गर्भवती महिलाओं के लिए यह मशीन अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगी।

रोटरी क्लब ऑफ सूरत सी-फेस की टी.आर.एफ. चेयर साधना साबू ने बताया कि रोटरी फाउंडेशन, रोटरी इंटरनेशनल तथा ताइवान सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रोटरी क्लबों के सहयोग से ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट के अंतर्गत यह मशीन मरीजों की सेवा के लिए भेंट की गई है। इसके माध्यम से जरूरतमंद गर्भवती महिलाओं को आने वाले वर्षों तक उच्च गुणवत्ता वाली जांच एवं बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिलता रहेगा।

इस अवसर पर मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. पारुल वडगामा, गायनेकोलॉजी एवं प्रसूति विभाग की प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. रागिनी वर्मा, आरएमओ डॉ. केतन नायक, स्टेम सेल बिल्डिंग के डॉ. लक्ष्मण टहेलानी, रोटरी क्लब के इमीडिएट पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अमरदीपजी बुनेट, असिस्टेंट गवर्नर बिपिनभाई, सोनल शाह, रोटरी क्लब ऑफ सूरत सी-फेस के अध्यक्ष मुकेश जैन, सचिव कविता शराफ, डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी मुरारी शराफ, इनर व्हील अध्यक्ष आशा मित्तल सहित रोटरी क्लब के पदाधिकारी, न्यू सिविल अस्पताल के चिकित्सक तथा नर्सिंग स्टाफ उपस्थित रहे।

76 मेडिकल कैंपों के माध्यम से कुल 2,179 मरीजों का उपचार किया गया

भारी बारिश के बाद सर्वाधिक प्रभावित सूरत जिले के 43 गांवों में स्वास्थ्य विभाग द्वारा सघन स्वास्थ्य सेवाएं और सर्विलांस अभियान लगातार जारी

घर-घर जाकर कुल 15,511 क्लोरीन टैबलेट वितरित, बुखार, दस्त-उल्टी, सर्दी-खांसी सहित 566 मामले दर्ज

»रिपोर्ट :- जे. बी. टांक, पत्रकार गुजरात

सूरत, मंगलवारः सूरत जिले में बारिश थमने के बाद संभावित महामारी और संक्रामक रोगों की रोकथाम तथा जनस्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला कलेक्टर एवं जिला विकास अधिकारी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग द्वारा व्यापक स्वास्थ्य सर्विलांस अभियान चलाया जा रहा है।

जिले के सर्वाधिक प्रभावित 43 गांवों एवं क्षेत्रों, जिनमें ओलपाड, सेवणी, तेन, कांकड़िया, हलदवा, लुवारा, लिम्बाडा, मासमा, सरोली, बगुमरा, बारडोली सहित अन्य प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य विभाग

की मेडिकल टीमें मौके पर पहुंचकर विभिन्न स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करा रही हैं।

प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य विभाग की 161 टीमों द्वारा अब तक 2,710 घरों का सर्वेक्षण किया गया है। इस दौरान घर-घर जाकर कुल 15,511 क्लोरीन टैबलेट वितरित की गईं तथा बुखार, दस्त-उल्टी, सर्दी-खांसी सहित कुल 566 मरीजों की पहचान की गई। इसके अलावा 76 मेडिकल कैंप आयोजित कर कुल 2,179 मरीजों का उपचार किया गया।

उल्लेखनीय है कि प्रभावित गांवों में स्वास्थ्य विभाग की मेडिकल टीमें लगातार सघन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रही हैं। टीमों द्वारा क्लोरीनेशन कार्य की निगरानी के साथ-साथ घर-घर जाकर ओआरएस (ORS), क्लोरीन टैबलेट तथा आवश्यक दवाओं का वितरण किया जा रहा है।

इसके साथ ही महामारी की रोकथाम के लिए इंट्रा एवं पेरा डोमेस्टिक एंटी-लार्वल गतिविधियां तथा पाउडर छिड़काव (डस्टिंग) किया जा रहा है। जलजनित एवं वाहकजनित रोगों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए आईईसी (IEC) गतिविधियां संचालित की जा रही हैं तथा दस्त, बुखार और सर्दी-खांसी जैसी सामान्य बीमारियों का मौके पर ही उपचार किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त पेयजल की शुद्धता की जांच हेतु आर.सी. टेस्ट (RC Test) किए जा रहे हैं तथा राहत शिविरों एवं आश्रय स्थलों पर विशेष स्वास्थ्य जांच शिविरों का भी आयोजन किया जा रहा है।

स्कूल लेवल पर मैथ, साइंस और एनवायरनमेंट एग्जीबिशन हुई

»रिपोर्ट दिनेश भाई ठाकोर

नगर प्राइमरी एजुकेशन कमिटी और श्री रामकृष्ण वेलफेयर ट्रस्ट के सहयोग से चलाए जा रहे क्रांतिवीर सरदारसिंह राणा प्राइमरी स्कूल नंबर 113 में स्कूल लेवल पर मैथ, साइंस और एनवायरनमेंट एग्जीबिशन हुई।

इस एग्जीबिशन में क्लास 6 से 8 तक के करीब 100 स्टूडेंट्स ने पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया। स्टूडेंट्स ने करीब 50 अलग-अलग काम और प्रोजेक्ट्स तैयार किए।

यह प्रोग्राम स्टूडेंट्स में नई चीजें सीखने की समझ, रिसर्च अप्रोच और कॉन्सेप्चुअल पावर को डेवलप करने के साथ-साथ उनकी क्रिएटिविटी को बढ़ावा देने के मकसद से ऑर्गनाइज किया गया था।

एग्जीबिशन की खासियत यह थी कि स्कूल के प्रिंसिपल और टीचर्स लगातार कड़ी मेहनत कर रहे थे और स्टूडेंट्स के तैयार किए गए बेस्ट प्रोजेक्ट्स को CRC और BRC लेवल तक ले जाने के लिए गाइड कर रहे थे।

इस पूरे प्रोग्राम ने स्टूडेंट्स की मैथ, साइंस और एनवायरनमेंट में दिलचस्पी बढ़ाई और उन्हें अपना टैलेंट और क्रिएटिविटी दिखाने का एक शानदार मौका दिया।

दुनिया के दुर्लभ फूल

स्ट्रोंगिलोडोन मैक्रोबोट्रिस

हल्के हरे रंग का स्ट्रोंगिलोडोन मैक्रोबोट्रिस एक तरह की लता है। पंजे के आकार वाले इसके फूल फिरोजी रंग के होते हैं। हालांकि इसका रंग नीले हरे से लेकर चटक हरे तक भी हो सकता है। ये फूल फिलीपींस के जंगलों में पाए जाते हैं और कटाई के कारण खतरे में हैं।

हिबिस्कस कोकियो

शू फ्लॉवर की ये प्रजाति, सिर्फ हवाई में मिलती है। 1950 में इसे विलुप्त घोषित कर दिया गया था। 20 साल बाद कोकियो का एक पेड़ मिला। लाल से नारंगी रंग के फूलों वाला ये पौधा एक आगजनी में खत्म हो जाता, लेकिन इसकी एक डाली बचा ली गई और इसे 23 अन्य पौधों में ग्राफ्ट किया गया।

एपिफाइलम ऑक्सीपेटालम

ये फूल श्रीलंका के जंगलों में होता है और बौद्ध धर्म में इसका खासा महत्व है। इस फूल की खासियत है कि यह सिर्फ रात में खिलता है और सुबह होने से पहले ही मुरझा जाता है।

डेंड्रोफिलैक्स लिंडेनी

क्यूबा और फ्लोरिडा के जंगलों में पाए जाने वाले इस फूल को भूतहा ऑर्किड का नाम दिया गया है। इसे 20 साल पहले ही विलुप्त घोषित कर दिया गया था। इसमें पत्तियां नहीं होती। इसकी जड़ें प्रकाश संश्लेषण कर फूल को पोषण देती हैं। इस फूल का परागण सिर्फ जायंट स्फिंक्स नाम की तितली कर सकती है।

एमोर्फोफैलस टाइटेनम

दुनिया का सबसे खूबसूरत और सबसे दुर्लभ यह फूल इंडोनेशिया में पाया जाता है। एक हफ्ते तक खिलने वाला यह फूल सड़े हुए जानवर जैसी बदबू फैलाता है। खिलने के बाद इसकी ऊंचाई तीन मीटर तक हो सकती है। सात आठ साल बाद यह फूल पहली बार खिलता है।

कॉस्मॉस एट्रोसैन्गिनियस

ये मेक्सिको के जंगली फूल हैं। 100 साल पहले ही ये विलुप्त हो गए थे। सिर्फ एक प्रजाति का क्लोन 1902 में बनाया गया। ये फूल गर्मियों में वैनिला जैसी खुशबू देते हैं। इन्हें चॉकलेट कॉस्मॉस भी कहा जाता है।

साइप्रिपेडियम कैलकेलस

कभी ये जंगली ऑर्किड पूरे यूरोप में मिलता था। लेकिन अब यह सिर्फ ब्रिटेन में होता है। पीले और जामुनी से रंग वाला ये फूल अब इतना दुर्लभ है कि इसकी एक डाली पांच हजार अमेरिकी डॉलर में मिल सकती है।

बड़ा दिलचस्प है स्क्रैपबुक बनाना

दोस्तों, आज हम तुमसे स्क्रैपबुक के बारे में बात करेंगे। स्क्रैपबुक बनाना सिर्फ काटने और चिपकाने के काम तक ही सिमटा हुआ नहीं है। यह एक अच्छी एक्टिविटी है। इससे तुम्हारी रचनात्मकता में निखार आएगा। अगर आसान शब्दों में समझें तो स्क्रैपबुक या स्क्रैप फाइल आकर्षक व रंगीन फोटो या तस्वीरों की एक एलबम होती है। काटने और चिपकाने वाली यह मजेदार एक्टिविटी एक तरह का आर्टवर्क भी है। जितना साधारण इसे समझना है, उतना ही आसान इसे बनाना भी है। वैसे स्क्रैपबुक कई तरह की होती हैं और इनको अलग रूप देना तुम पर निर्भर है।

इस काम का फायदा

यह एक अच्छी एक्टिविटी है। फाड़ना, काटना, चिपकाना, लिखना यानी यह सिर्फ एक मजेदार कार्य ही नहीं है, बल्कि इस काम से तुम्हारी सोचने-समझने की क्षमता भी निखरती है। सोचने, समझने की शक्ति और दिमागी एक्सरसाइज से यह तुम्हारे लिए एक फायदेमंद प्रोजेक्ट हो सकता है। अच्छा होगा अगर काटने-चिपकाने-लिखने और तरह-तरह के फोटो ढूंढने का सभी काम तुम खुद करो। स्क्रैपबुक बनाना एक अच्छा क्रिएटिव आइडिया है, जो क्लास लेवल के अनुसार बदलता रहता है।

कैसे करें तैयार

इस काम के लिए तुम्हें जरूरत होगी एक रेडीमेड स्क्रैपबुक की। इसके अलावा कैंची, फेविस्टिक या फेविकोल, पेंसिल, पेन, कलरपेन और मार्कर भी तुम्हें चाहिए होंगे। यदि तुम चाहो तो रेडीमेड स्क्रैपबुक की बजाय खुद भी स्क्रैपबुक बना सकते हो। सबसे पहले टीचर द्वारा दिए गए विषय के अनुसार स्टिकर या फोटो इकट्ठा करने की तैयारी करो। इसके लिए स्टिकर्स या कट एंड पेस्ट बुक या कोई चार्ट बुक शॉप से मिल जाएंगे। एक अच्छा आइडिया है अगर तुम घर पर रखे पुराने अखबार या मैगजीन से जरूरी फोटो काट लो। इसके अलावा अपनी स्क्रैपबुक में कुछ ऑरिजनल लुक देने के लिए खुद भी स्केच या ड्रॉइंग कर स्टिकर बना सकते हो। फोटो इकट्ठे करने के लिए तुम मम्मी-पापा या साथी स्टूडेंट्स की मदद ले सकते हो। स्टिकर और फोटो इकट्ठा करने के बाद बारी है स्क्रैपबुक का हर पेज सजाने की। स्टिकर्स-फोटो को सिम्पल या डिजाइन में काटकर अच्छे ढंग से चिपकाना स्क्रैपबुक को खूबसूरत लुक देने के लिए जरूरी है। ध्यान रहे कि फेविकोल से स्क्रैपबुक का कलर पेज गंदा न हो जाये। यह भी ध्यान रखो कि विषय के अनुसार ही हर पेज तैयार किया गया हो और सही जगह पर ही स्टिकर या फोटो पेस्ट की गई हो। फोटो चिपकाने के बाद बारी है हर पेज पर हैडिंग देने की। थीम के अनुसार पेज के सबसे ऊपर कहीं (दाएं-बाएं-मध्य) भी पेंसिल से लाइन खींचकर एक साफ-सुथरी हैडिंग लिखो। हैडिंग लिखने के लिए तुम कलरपेन, पेन या मार्कर का इस्तेमाल कर सकते हो। इसे स्टाइल में भी लिखा जा सकता है। यह पूरी तरह से तुम्हारे ऊपर है कि तुम सुंदर ढंग से एक अच्छी हैडिंग कैसे लिखते हो। अब स्टिकर या फोटो को नाम दो। कैप्शन लिखो। ध्यान रहे कि यह लिखने के लिए तुमने फोटो के नीचे थोड़ी जगह छोड़ी है। एक सामान्य स्क्रैपबुक में एनिमल, बड्र्स, वेजिटेबल पेजों पर स्टिकर के नीचे नाम लिखे जाते हैं।

पर्सनल स्क्रैपबुक

स्कूल में दिये जाने वाले इस काम का एक फायदा यह भी है कि इसका आइडिया हमेशा तुम्हारे साथ रह सकता है। तुम घर पर भी अपनी पर्सनल स्क्रैपबुक बना सकते हो। तुम मम्मी-डैडी, दोस्तों के साथ बाहर घूमने जाते हो। मॉल, पार्क, फन पार्क, चिड़ियाघर या छुट्टियों में कहीं शहर से बाहर जाते हो। इन सब जगहों से ली गई फोटो से तुम एक अच्छी स्क्रैपबुक बना सकते हो। यहां से मिली कई छोटी-छोटी चीजों को इकट्ठा कर स्क्रैपबुक में लगा सकते हो।

इस तरह इन खूबसूरत पलों की यादें हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगी और इस आइडिया से तुम्हारी खुद से जुड़ी एक मौलिक (ऑरिजिनल) स्क्रैपबुक तैयार हो जाएगी। यह एक्टिविटी तुम कभी भी हफ्ते, महीने में एक बार कर सकते हो। इसलिए स्क्रैपबुक सिर्फ तुम्हारी पढ़ाई का ही हिस्सा नहीं है, बल्कि यह आगे चलकर तुम्हारी जिंदगी का भी हिस्सा बन सकती है।

समझदार किट्टू

किट्टू खरगोश, बिट्टू बन्दर, टीटू हाथी और मींकू मेढक चारों पक्के दोस्त थे। सभी एक साथ ही स्कूल जाते और एक साथ ही स्कूल से लौटते। साथ घूमना-फिरना, एक साथ रिसेज में खाना खाना और घर जाने के बाद होमवर्क भी साथ ही करना। ये उनका रोज का रूटीन था। वैसे तो सारा समय साथ ही बिताते, लेकिन पढ़ने के समय शरारतें करते। इनमें बिट्टू बन्दर का ध्यान पढ़ाई में कम ही लग पाता था। लेकिन शरारतों में सबसे आगे रहता। चारों दोस्तो में किट्टू खरगोश सबसे इंटेलिजेंट था। क्लास में जब भी कोई प्रश्न पूछा जाता, सबसे पहले किट्टू ही हाथ उठाकर जवाब देता। लेकिन उसके दिल में तीनों दोस्तों के लिए बहुत प्यार था। वह हमेशा कहता, 'देखो जब तुम लोग कहते हो तो मैं तुम्हारे साथ खेलता हूं ना, तो फिर जब मैं पढ़ने को कहता हूं तो तुम्हें भी पढ़ना चाहिए ना? मेरे प्यारे दोस्तो, क्या तुमने वो कहावत नही सुनी कि 'खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब। पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब', इसलिए खेलने के समय खेलो, पर पढ़ने के समय पढ़ भी लिया करो।' लेकिन किट्टू की यह बात सुनकर टीटू हमेशा हंस देता। कहता, 'सारा दिन तो क्लास में मैडम की बात सुनकर बोर हो जाते हैं और बाहर आते ही तुम शुरू हो जाते हो'।

अचानक मींकू बीच में ही बोलता है, 'अरे यार, न्यूईयर की पार्टी में अब सिर्फ 3 या 4 दिन ही बाकी रह गए हैं, तो बताओ कि इस बार की पार्टी का क्या प्लान है।' तभी बिट्टू बन्दर उछलने लगता है। भई वाह, न्यू ईयर पार्टी में बड़ा मजा आएगा।

क्या-क्या सोचा है, इस बार पार्टी के लिए। किट्टू खरगोश फिर कहता है, भाई, पार्टी तो बाद में भी की जा सकती है। जरा ये सोचो कि एग्जाम आने वाले है। अगर हम अभी से ही पढ़ना शुरू कर दें तो हम टॉप भी कर सकते हैं। टीटू हाथी फिर बीच में आकर कहता है, अभी एग्जाम की बात नहीं होगी, पहले पार्टी, बाकी सब उसके बाद।

अब किट्टू खरगोश चुप हो जाता है और कहता है, ठीक है भाई पहले पार्टी, लेकिन इस बार पार्टी मेरे यहां नहीं रखेंगे। टीटू हाथी फटाफट बीच में बोलता है। यप्पी इस बार पार्टी मेरे यहां रखेंगे। तो तय हुआ इस बार केक के साथ पेप्सी, समोसे, चाऊमीन और बर्गर जरूर होना चाहिए। मींकू मेढक खुशी जाहिर करते हुए चिल्लाने लगता है। इस बार बड़ा मजा आने वाला है। लेकिन हां, गाना बजाना भी जरूर होना चाहिए, ठीक है। और बिट्टू बन्दर लीडर बनता हुआ कहता है, हां, जरूर होगा। अब सारे दोस्त पार्टी की तैयारियों में बिजी हो जाते हैं। कोई डेकोरेशन की तैयारियों में बिजी, तो कोई खाने के सामान की जिम्मेदारी लेता है। लेकिन किट्टू खरगोश बड़ा समझदार होता है। वो सिर्फ केक लाने की जिम्मेदारी लेता है, जिसमें ज्यादा समय न खराब हो सके। वो अपने बाकी दोस्तों की तरह अपना सारा ध्यान पार्टी में लगाता। थोड़ा सा भी समय मिलता तो तुरन्त पढ़ने लगता। लेकिन बाकी सब पढ़ाई को भूल कर न्यू ईयर की तैयारी में बिजी चल रहे थे। अब न्यू ईयर की ईवनिंग आती है। बिट्टू बन्दर बड़ा खुश होता है। आज तो पार्टी है,ये सोचकर बार-बार मींकू मेढक को फोन करके पूछता रहता है, मैं कौन-सी शर्ट पहनूं और खूब तैयारियां करता है। मींकू भी पार्टी को लेकर बड़ा एक्साइटेड होता है। वहीं किटटू खरगोश अपना सारा ध्यान पढ़ाई पर लगाता है।

शाम को सब टीटू हाथी के घर इकट्ठा होते हैं। थोड़ी ही देर में पार्टी भी शुरू हो जाती है। बिट्टू बंदर खूब डांस करता है। जब सारे दोस्त मस्ती कर रहे होते हैं तो किटटू वहीं बैठकर यह सोचता है कि इस बार यूनिट टेस्ट में इन सबका क्या होगा, क्योंकि पार्टी के चक्कर में इन्होंने तैयारी तो की ही नहीं है। किट्टू खरगोश यह सोचते हुए ही वहां से निकल जाता है और घर पहुंचकर पढ़ना शुरू कर देता है। अगले दिन यूनिट टेस्ट होता है। सभी पेपर देते हैं, लेकिन किट्टू के तीनों दोस्त उदास हो जाते हैं। पेपर देखकर उन्हें समझ ही नहीं आता कि क्या लिखें। उनका पेपर देखकर मैडम भी उन्हें खूब डांटती हैं और कहती हैं, 'तुम्हारा ध्यान पढ़ने में बिल्कुल नहीं है। क्या तुम्हें नहीं पता था कि आज पेपर है। अपने दोस्त किट्टू से कुछ सीखो, वो कितना समझदार है। उसने पूरा पेपर किया है'। अपने दोस्तों को डांट पड़ती देख किटटू को बहुत बुरा लगता है। कुछ दिन बाद ही रिजल्ट आता है। मैडम किट्टू को शाबाशी देते हुए कहती हैं, 'तुमने टॉप किया है बेटा, वेलडन।' मैडम सभी बच्चों को रिजल्ट दे देती हैं, लेकिन किटटू के तीनों दोस्तों को नहीं देतीं। उन्हें पेरेंट्स को बुलाने को कहती हैं। यह सुनकर सभी डर जाते हैं। किट्टू के रिक्वेस्ट करने पर मैडम बताती हैं कि तीनों फेल हो गए हैं। किट्टू बहुत उदास होता है और खुशी भुलाकर दोस्तों को दिलासा देते हुए कहता है, 'कोई बात नहीं दोस्तो, इस बार अच्छे से मेहनत करना और तुम ही टॉप करना। लेकिन मुझे बहुत दुख हुआ है।' इसके बाद से किट्टू के तीनों दोस्त सुधर गए और वो भी किट्टू की ही तरह पढ़ाई में ध्यान लगे। फिर तो तीनों में यह शर्त लगती थी कि कौन फर्स्ट आएगा और कौन सेकेंड।

सारे दोस्त पार्टी की तैयारियों में बिजी हो जाते हैं। कोई डेकोरेशन की तैयारियों में बिजी, तो कोई खाने के सामान की जिम्मेदारी लेता है। लेकिन किट्टू खरगोश बड़ा समझदार होता है। वो सिर्फ केक लाने की जिम्मेदारी लेता है, जिसमें ज्यादा समय न खराब हो सके। वो अपने बाकी दोस्तों की तरह अपना सारा ध्यान पार्टी में लगाता।

गोपनीय स्वरूप है भगवती छिन्नमस्ता का

भगवती छिन्नमस्ता का स्वरूप अत्यंत ही गोपनीय है। इसे कोई अधिकारी साधक ही जान सकता है। महाविद्याओं में इनका तीसरा स्थान है। इनके प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है– एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिए गयीं। स्नान के बाद क्षुधाग्नि से पीड़ित होकर वे कृष्णवर्ण की हो गयीं। उस समय उनकी सहचरियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिए मांगा। देवी ने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिए कहा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सहचरियों ने जब पुनः भोजन के लिए निवेदन किया, तब देवी ने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करने के लिए कहा। इस पर सहचरियों ने देवी से विनम्र स्वर में कहा कि मां तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं? अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवी ने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्ध से रक्त की तीन धाराएं प्रवाहित हुईं। वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दीं, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धारा को देवी स्वयं पान करने लगीं। तभी से देवी छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। शत्रु विजय, समूह स्तम्भन, राज्य प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष प्राप्ति के लिए छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छिन्न यज्ञशीर्ष की प्रतीक ये देवी श्वेतकमल पीठ पर खड़ी हैं। दिशाएं ही इनके वस्त्र हैं। इनकी नाभि में योनिचक्र है। कृष्ण (तम) और रक्त (रज) गुणों की देवियां इनकी सहचरियां हैं। ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं। यह अपने आप में पूर्ण अन्तर्मुखी साधना का संकेत है। विद्वानों ने इस कथा में सिद्धि की चरम सीमा का निर्देश माना है। योगशास्त्र में तीन ग्रंथियां बतायी गयी हैं, जिनके भेदन के बाद योगी को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। इन्हें ब्रम्हाग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि तथा रुद्रग्रन्थि कहा गया है। मूलाधार में ब्रम्हग्रन्थि, मणिपूर में विष्णुग्रन्थि तथा आज्ञाचक्र में रुद्रग्रन्थि का स्थान है। इन ग्रंथियों के भेदन से ही अद्वैतानन्द की प्राप्ति होती है। योगियों का ऐसा अनुभव है कि मणिपूर चक्र के नीचे की नाड़ियों में ही काम और रति का मूल है, उसी पर छिन्ना महाशक्ति आरुढ़ हैं, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होने पर रुद्रग्रन्थि का भेदन होता है।

छिन्नमस्ता का वज्र वैरोचनी नाम शाक्तों, बौद्धों तथा जैनों में समान रूप से प्रचलित है। देवी की दोनों सहचरियां रजोगुण तथा तमोगुण की प्रतीक हैं, कमल विश्वप्रपंच है और कामरति चिदानन्द की स्थूलवृत्ति है। बृहदारण्यक की अश्वशिर विद्या, शाक्तों की हयग्रीव विद्या तथा गाणपत्यों के छिन्नशीर्ष गणपति का रहस्य भी छिन्नमस्ता से ही संबंधित है। हिरण्यकशिपु, वैरोचन आदि छिन्नमस्ता के ही उपासक थे। इसीलिये इन्हें वज्र वैरोचनीया कहा गया है। वैरोचन अग्नि को कहते हैं। अग्नि के स्थान मणिपूर में छिन्नमस्ता का ध्यान किया जाता है और वज्रानाड़ी में इनका प्रवाह होने से इन्हें वज्र वैरोचनीया कहते हैं। श्रीभैरवतन्त्र में कहा गया है कि इनकी आराधना से साधक जीवभाव से मुक्त होकर शिवभाव को प्राप्त कर लेता है।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। शत्रु विजय, समूह स्तम्भन, राज्य प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष प्राप्ति के लिए छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सोमवार को ही शिव का वार क्यों कहा जाता है

पुराणशिरोमणि शिवमहापुराण के अनुसार– आरोग्यंसंपद चैव व्याधीनांशांतिरेव च। पुष्टिरायुस्तथाभोगोमृतेर्हानिर्यथाक्रमम॥

अर्थात स्वास्थ्य, संपत्ति, रोग–नाश, पुष्टि, आयु, भोग तथा मृत्यु की हानि के लिए रविवार से लेकर शनिवार तक भगवान शंकर की आराधना करनी चाहिए। सभी दिनों में शिव फलप्रद हैं। पुराणों के अनुसार सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा भगवान शंकर के शीश पर मुकुटायमान होकर अत्यन्त सुशोभित होता है। भगवान शंकर ने जैसे कुटिल, कलंकी, कामी, वक्री एवं क्षीण चंद्रमा को उसके अपराधी होते हुए भी क्षमा कर अपने शीश पर स्थान दिया वैसे ही भगवान हमें भी सिर पर नहीं तो चरणों में जगह अवश्य देंगे। यह याद दिलाने के लिए सोमवार को ही लोगों ने शिव का वार बना दिया और सोम का अर्थ सौम्य होता है। भगवान शंकर अत्यन्त शांत समाधिस्थ देवता हैं। इस सौम्य भाव को देखकर ही भक्तों ने इन्हें सोमवार का देवता मान लिया। सहजता और सरलता के कारण ही इन्हें भोलेनाथ कहा जाता है। सोम का अर्थ चंद्रमा भी होता है और चंद्रमा मन का प्रतीक है। जड़ मन को चेतनता से प्रकाशित करने वाला परमेश्वर ही है। मन की चेतनता को पकड़कर हम परमात्मा तक पहुंच सके इसलिए देवाधिदेव भूतभावन पूतपावन परमेश्वर की उपासना सोमवार को की जाती है।

जप में माला का प्रयोग क्यों होता है

आपने देखा होगा कि बहुत से लोग ध्यान करने के लिए और भगवान का नाम जपने के लिए माला का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग उंगलियों पर गिन कर भी ध्यान जप करते हैं। लेकिन शास्त्रों में माला पर जप करना अधिक शुद्ध और पुण्यदायी कहा गया है। इसके पीछे धार्मिक मान्याताओं के अलावा वैज्ञानिक कारण भी है। धार्मिक दृष्टि से देखें तो अंगिरा ऋषि के कथन पर ध्यान देना होगा। अंगिरा ऋषि के अनुसार असंख्या तु यज्जसं, तत्सर्वं निष्फलं भवेत। यानी बिना माला के संख्याहीन जप का कोई फल नहीं मिलता है। इसका कारण यह है कि, जप से पहले जप की संख्या का संकल्प लेना आवश्यक होता है। संकल्प संख्या में कम ज्यादा होने पर जप निष्फल माना जाता है। इसलिए त्रुटि रहित जप के लिए माला का प्रयोग उत्तम माना गया है। जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से यह माना जाता है कि अंगूठे और उंगली पर माला का दबाव पड़ने से एक विद्युत तरंग उत्पन्न होती है। यह धमनी के रास्ते हृदय चक्र को प्रभावित करता है जिससे मन एकाग्र और शुद्ध होता है। तनाव और चिंता से मुक्ति मिलती है। माना जाता है कि मध्यमा उंगली का हृदय से सीधा संबंध होता है। हृदय में आत्मा का वास है इसलिए मध्यमा उंगली और उंगूठे से जप किया जाता है।

धरती पर ब्रह्माजी का निवास पुष्कर तीर्थ

जयपुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित अजमेर हिन्दू-मुस्लिम धर्म का संगम स्थल रहा है। अजमेर हिन्दू तीर्थ यात्रियों में उतना ही लोकप्रिय है जितना कि मुसलमानों में। अजमेर से मात्र 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पुष्कर मंदिरों और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। अरावली पर्वत श्रृंखला का नाग पर्वत अजमेर और पुष्कर को अलग करता है। यह भगवान ब्रह्मा के एकमात्र मंदिर के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। इसे भगवान ब्रह्मा का निवास स्थान भी कहा जाता है। मन्दिर के बगल में ही एक मनोहर झील है जिसे पुष्कर झील के नाम से जाना जाता है। पुष्कर झील हिन्दुओं एक परमपावन स्थान के रूप में जानी जाती है। कार्तिक के महीने में श्रद्धालु बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर इस पवित्र झील में डुबकी लगाते हैं।

धार्मिक मान्यता

हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए पुष्कर बहुत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार पुष्कर की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। पुष्कर हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थो में से एक है। इसका बनारस या प्रयाग की तरह ही महत्व है । बद्रीनारायण, जगन्नाथ, रामेश्वरम, द्वारका इन चार धामों की यात्रा करने वाले किसी तीर्थयात्री की यात्रा तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक वह पुष्कर के पवित्र जल में स्नान नहीं कर लेता।

पौराणिक कथा

हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुसार भगवान ब्रह्मा त्रिदेवों में से एक देव हैं। तीनों देवों का कार्य ,जीवन चक्र (जन्म,पालन,विनाश) के आधार पर विभाजित है। ब्रह्मा जी का कार्य जन्म देना है। ब्रह्मा जी को दाढ़ीयुक्त चार सिरों वाला ,जिसके चार हाथ हैं, के रूप में चित्रित किया गया है। ब्रह्मा जी के प्रत्येक हाथ में वेद (ज्ञान) हैं। ब्रह्मा जी का वाहन हंस है। एक बार भगवान ब्रह्मा पवित्र उद्देश्य के लिए यज्ञ करने का निश्चय किया। यह यज्ञ वह सबसे शुभ समय पर करना चाहते थे। किन्तु उनकी पत्नी सरस्वती, जिनका यज्ञ के समय रहना अत्यावश्यक था, ने उन्हें इन्तजार करने को कहा। इससे झुंझलाकर ब्रह्मा जी ने गायत्री जो कि एक ग्वालिन थी, से विवाह कर उन्हें यज्ञ में बैठा दिया। सरस्वती जी ने जब अपने स्थान पर दूसरे को देखा तो वे क्रोध से भर गयी। उन्होंने ब्रह्मा जी को श्राप दे दिया कि पृथ्वी के लोग उन्हें भुला देंगे और कभी पूजा नहीं होगी। किन्तु अन्य देवताओं की प्रार्थना पर वो पिघल गयी और कहा कि ब्रह्मा जी केवल पुष्कर में पूजे जाएंगे। इसी कारण यहाँ के अलावा और कहीं भी ब्रह्माजी का मंदिर नहीं है।

पुष्कर का अर्थ

विद्वानों के अनुसार पुष्कर का अर्थ है ऐसा तालाब जिसका निर्माण फूल से हुआ। पद्म पुराण के अनुसार पुष्कर झील का निर्माण उस समय हुआ जब यज्ञ के स्थान को सुनिश्चित करते समय ब्रह्मा जी के हाथ से कमल का फूल पृथ्वी पर गिर पड़ा। इससे पानी की तीन बूदें पृथ्वी पर गिर गयी, जिसमें एक बूंद पुष्कर में गिर गयी। इसी बूंद से पुष्कर झील का निर्माण हुआ।

ब्रह्मा मंदिर

चमक दमक से युक्त पुष्कर कस्बा धार्मिक मिथों और विश्वासों से भरा है। यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण ब्रह्माजी का मंदिर है। मंदिर का निर्माण संगमरमर पत्थर से हुआ है तथा इसे चाँदी के सिक्कों से सजाया गया है। इन चाँदी के सिक्कों पर दानदाता के नाम भी खुदे हुए हैं। इसके अलावा मंदिर के दीवालों पर भी दानदाताओं के नाम लिखे हैं। यहाँ मंदिर के फर्श पर एक रजत कछुआ है। ज्ञान की देवी सरस्वती के वाहन मोर के चित्र भी मंदिर की शोभा बढ़ाते हैं। यहां गायत्री देवी की एक छोटी प्रतिमा और किनारे ब्रह्माजी की चार मुखों वाली मूर्ति को चौमूर्ति कहा जाता है। इस पवित्र मंदिर का प्रवेश द्वार संगमरमर का और दरवाजे चांदी के बने हैं। यहां भगवान शिव को समर्पित एक छोटी गुफा भी बनी है।

पुष्कर झील

पुष्कर झील अपनी पवित्रता और सुंदरता के लिए पूरे विश्व में जानी जाती है। ऐसा मान्यता है कि पुष्कर झील उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि और तीर्थयात्रा के रूप में यह अत्यंत प्राचीन काल से ही जाना जाता है। इस झील में नहाने के लिए के लिए 52 घाट बने हुए हैं जहां दिल में गहरी धार्मिक आस्था लिए श्रद्धालु डुबकी लगाते हैं। पुष्कर समय के झंझावातों में सदैव खड़ा रहा है। यह भगवान राम के समय से लेकर अब तक बदलते इतिहास का शांत गवाह है। इसका उल्लेख चौथी शताब्दी में आये चीनी यात्री फाह्यान ने भी किया है।

पुष्कर मेला

पुष्कर मेला, ऊंट मेला के लिए जाना जाता हैं। यह भारत के सबसे बड़े मेलों में से एक है और अपनी तरह का विश्व में अकेला है। मेले के दौरान भारत के ग्रामीण क्षेत्रों से लाखों लोग अपने ऊटों और अन्य पशुओं के साथ यहाँ कई दिनों तक रहकर तीर्थयात्राओं और धार्मिक उत्सवों में अपना व्यापार करते हैं। मेले के दौरान यह छोटा कस्बा अद्भुत सांस्कृतिक छटा बिखेरने लगता है। इस समय रंग–बिरंगे कपड़े पहने श्रद्धालु, जादूगर, कलाबाज, लोक नर्तक, व्यापारी, भांड, साधू, पर्यटक यहां पहुंचते हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार कार्तिक महीने के अष्टमी के दिन मेला शुरू होकर पूर्णिमा के दिन तक चलता है। मेले के पहले भाग में पशुओं के व्यापार पर जोर रहता है तो दूसरे भाग में धार्मिक गतिविधियों पर जोर रहता है। इस समय श्रद्धालु पवित्र झील के जल में डुबकी लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस जल में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मेले में ऊटों, पशुओं, महिलाओं के श्रृंगार के सभी सामान एक ही जगह पर बिकते हैं। हाथों से बने छोटे सामान यादगार के लिए खरीदना सबसे अच्छा होता है। ऊटों और घोड़ो की दौड़ को जनता खूब प्रोत्साहित करती है। ऊटों की दौड़ पशु प्रमियों में खूब लोकप्रिय है। प्रत्येक शाम को यहां अलग–अलग राजस्थानी लोक नृत्य और संगीत का आयोजन किया जाता है। जिसमें खूब भीड़ उमड़ती है। इस मेले का अपना जादू है जो यात्रायों के जीवन भर का अनुभव बन जाता है। मेले के दौरान शिल्पग्राम द्वारा कला और शिल्प की प्रदर्शनी लगायी जाती है।

Printed / Published /Owned by ILEVAN H. THAKAR on behalf of ILEVAN H. THAKAR and Printed at JAY GRAPHICS AND PRINTERS, C/15, Vikram Chambers, Income Tax, Ashram Raod, Ahmedabad - 380 009. Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR.(GUI) Editor: ILEVAN H. THAKAR